हम भारतीय क्यों नहीं?

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 357 अगस्त–2025

कहानियां

हरियश राय गोविंद उपाध्याय
आशीष दशोत्तर हुस्न तबस्सुम निहां
चोई-इन-हो (कोरियाई कहानी)

भारतीयता और मेरी रचनात्मक अंतर्दृष्टि

एस. रामाकृष्णन ज्ञान प्रकाश विवेक वर्षा अडालजा
नलिनी बेरा गिन्नारापु आदिनारायणा मुईद रशीदी
विहाग वैभव पापरी बर्मन
(प्रस्तुति : सुशील कांति)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 357, अगस्त 2025

संपादक

शंभुनाथ

प्रबंध संपादक

प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक

डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग

अंक सज्जा

सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक

उपमा ऋचा

upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग

36 ए, शेक्सपियर सरणी

कोलकाता–700017

vagarth.hindi@gmail.com

7449503734

(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण

तारक नाथ राय

इस अंक में

हम भारतीय क्यों हैं? : **संपादकीय** 5

कहानियां

इबारत : **हरियश राय** 12

कीर्तन : **गोविंद उपाध्याय** 19

गिंडोले : **आशीष दशोत्तर** 26

प्रेम (लंबी कहानी) : **हुस्न तबस्सुम निहां** 34

कविताएं

मनीष यादव/विनोद प्रकाश गुप्त 'शलभ'/प्रवीण पारीक 'अंशु'/श्रीधर करुणानिधि/गोलेंद्र पटेल/रमेश यादव राजेंद्र नागदेव/सारिका भूषण/अखिलेश श्रीवास्तव चमन प्रांशु वर्मा/रमेशचंद्र पंत 50

मराठी कविता : **प्रशांत असनारे**

(अनुवाद : **सुधीर ओखदे**) 68

संवाद

भारतीयता और मेरी रचनात्मक अंतर्दृष्टि : **एस. रामाकृष्णन**

ज्ञान प्रकाश विवेक/वर्षा अडालजा/नलिनी बेरा/गिन्नारापु आदिनारायणा/मुईद रशीदी/विहाग वैभव/पापरी बर्मन

(प्रस्तुति : **सुशील कान्ति**) 70

विश्वदृष्टि

चिनार का पेड़ : **चोई–इन–हो** (कोरियाई कहानी)

(अंग्रेजी से अनुवाद : **विजय कुमार यादव**) 97

समीक्षा संवाद

उपन्यास : यथार्थ और संभावना के बीच : **सरोज सिंह**
(भगवानदास मोरवाल, प्रदीप गर्ग और कुणाल सिंह की पुस्तकें) 104

सोशल मीडिया 111

विविध

पाठक संसद/किताबें 113

लघुकथा

एक नई लकीर : **पवन शर्मा** 29

बतरस

हिटलर का देश अहिंसा के मार्ग पर : (जर्मनी यात्रा) : **कुसुम खेमानी** 116

देश-देशांतर

प्रशांत असनारे (मराठी)/ **बर्तोल्त ब्रेख्त** (जर्मन)

मल्टी मीडिया

धूमिल की कविता **देश प्रेम मेरे लिए**
वाचन : **सुशील कान्ति**

रेखाचित्र और कवर
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2900/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

हम भारतीय क्यों हैं

क्या भारतीयता में कोई आकर्षण नहीं है, क्या यह 20वीं सदी का एक फ्यूज्ड बल्ब है? देश में स्वार्थ कभी इस तरह सर्वोपरि नहीं हुआ था। इसलिए अब धर्म, जाति और प्रांत-आधारित धारणाओं में ज्यादा आकर्षण है। लोगों की भारतीय पहचान धूमिल होती जा रही है।

भारतीय राष्ट्र ऐसा है जिसकी भोर होते-होते फिर रात आ गई। यह जितनी मुश्किल से हासिल हुआ, उतनी ही आसानी से कुछ को काल्पनिक और कुछ को बोझ लगने लगा है। एक समय भारतेंदु, प्रेमचंद, निराला आदि लेखक जब भारत कहते थे, इसका एक बड़ा अर्थ था। आज किसी का भारत उसके धर्म में है, किसी का उसकी जाति में है, किसी का उसके प्रांत में है। कुछ के खुद ही भारत बन जाने के उदाहरण हैं। आज 'राष्ट्र राज्य' जब तेजी से 'बाजार राज्य' में बदल रहा है और इसमें रोशनियों की बाढ़ है, मनुष्य को अपने भीतर का अंधेरा अंधेरा नहीं लग रहा है।

गांधी ने 100 साल पहले, 1925 के 'यंग इंडिया' में एक महत्वपूर्ण बात कही थी, 'हमें भारत को जीना सीखना होगा।' भारत को जीने से दो अन्य चीजें जुड़ी हैं- भारत को जानना और बदलना। भारत को जीने में कुछ खामियां रह गईं जिनके कारण इस देश को जानने और बदलने के मार्गों में गड़बड़ियां पैदा हुईं। लोग भूल गए कि उन्हें भारत को जीना सीखना है।

दरअसल भारत के लोग क्या थे, क्या हो गए और अभी क्या होंगे, ये सवाल हर युग में रहेंगे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने 1946 में स्वतंत्रता की देहरी पर कहा था, 'मैं महसूस करता हूँ कि भारत लोकतंत्र के सिद्धांतों पर चलने वाला एक ऐसा देश बनेगा जो एशिया का प्रकाश हो सकता है।' दुनिया के लोग भारत की स्वतंत्रता में एशिया का नया भविष्य देख रहे थे।

लोग तब औपनिवेशिक ध्वंसावशेष पर स्वतंत्र भारत को लेकर बड़े-बड़े सपने देखते थे, नई-नई कल्पना करते थे और इन्हीं नई लहरों में भारत का संविधान बना। दूसरी तरफ, देश को मुक्त करके गए अंग्रेज शासक इतने शरीफ